“ विकास की गाथा
एक स्कूल की ”

Case study on Community Participation

शासकीय प्राथमिक शाला मुनगेसर
नगर पंचायत कौशिल्या धाम चंदखुरी
विकासखण्ड आरंग ,जिला रायपुर छ.ग.

सामान्य जानकारी

प्राथमिक शाला	:–	मुनगेसर
डाईस कोड़	:–	22112214901
स्थापना वर्ष	:–	1972
संकुल केन्द्र	:–	बड़गांव
विकास खण्ड	:–	आरंग
जिला	:–	रायपुर
दर्ज संख्या	:–	72
बालक	:–	33
बालिका	:–	39
शिक्षकों कि संख्या	:–	05
पुरूष	:–	03
महिला	:–	02
कक्ष	:–	04
बरामदा	:–	02

खण्ड – 01

प्रस्तुतीकरण का शीर्षक

विकास कि गाथा एक स्कूल की

नाम – श्री ओंकार प्रसाद वर्मा
पद – प्रधान पाठक
स्कुल का नाम – शा.प्रा.शा. मुनगेसर
वि.खं. आरंग, जिला रायपुर छ.ग.
मो.नं. 9754175501,8839571715
Email ID :- mr.onkarverma69@gmail.com

मेरे बारे में,

मै ओंकार प्रसाद वर्मा प्रधान पाठक शासकीय प्राथमिक शाला मुनगेसर द्वारा अपनी बारे मे जानकारी कुछ इस प्रकार है।

संस्था प्रमुख के रूप में 2010 से शासकीय प्राथमिक शाला केसला विकासखण्ड पलारी जिला बलौदाबाजार में सेवा दी , स्थानांतरण पश्चात प्राथमिक शाला मुनगेसर 24/08/2017 से आज तक कार्यरत हूँ। इस प्रकार संस्था प्रमुख के रूप 13 वर्षो का अनुभव को दर्शाता है।

मैं ग्राम मुनगी पोस्ट चंदखुरी का निवासी हूँ, मैने अपने प्रारंभिक शिक्षा अध्ययन गांव मे ही किया और उच्च शिक्षा कि पढ़ाई रायपुर से की है। मेरी योग्यता एम.ए. (समाजशास्त्र) बी. टी. आई. प्रशिक्षित हूँ।

कार्यभार ग्रहण करते समय हमने यह पाया कि स्कूल मे रखें दस्तावेज दुरूस्तीकरण करने की विचार मन मे लेकर संकल्पित भाव से शाला मे रखे आवश्यक पंजी संधारण कर व्यवस्थित तौर तरीका से किए जाने की आश्यकता जैसे विषय शामिल है सो हमने कियां।

मेरी सोच हमेशा स्कूल और छात्रों के हित में रहा है, और मन मे नित नये नये कार्य करने की तम्मना बनी रहती है। जिससे छात्र हित हो इन्ही भावनाओं के चलते छात्रों के माध्यम से भविष्य मे एक अच्छे समाज की कल्पना कि सकती है। यही मेरा मानना है।

प्रस्तुतीकरण के बारे में

यह प्रस्तुतीकरण प्रधान पाठक के रूप मे 13 वर्षो के अनुभव को दर्शाता है। जिसमें मुख्य रूप से अपनी शालेय अनुभव को शामिल किया गया है।

प्रस्तुतीकरण शा.प्राथमिक शाला मुनगेसर में संस्था प्रमुख के रूप मे किए गये प्रयास :–

- नवाचार ।
- सहपाठियों के साथ आपसी समन्वय ।
- सामुदायिक भागीदारी को बढ़ावा देना ।
- अधोसंरचनात्मक विकास।
- संज्ञानात्मक ,सहसंज्ञानात्मक क्षेत्र को प्राथमिकता।
- पुरखा के सुरता नामक धरोहर कक्ष निर्माण ।
- शैक्षणिक सामाग्री स्थल का विकास आदि ।

से संबंधित है। इस दौरान कार्य करते हुए आने वाले चुनौतियों का सामना कर और उनके निराकरण करने का प्रयास शामिल है। प्रस्तुतीकरण के माध्यम से शाला विकास की गाथा का विवरण किया गया है। बुनियादी स्तर से उठकर सफलता की ओर बढ़ने को अग्रसर है।

खण्ड – 02

प्राथमिक शाला मुनगेसर

संकुल – बड़गांव , विकासखंण्ड आरंग,जिला रायपुर छत्तीसगढ़

डाईस कोड़ – 22112214901

शासकीय प्राथमिक शाला मुनगेसर कि स्थापना सन् 1972 मे हुआ है। यह ग्राम राजधानी रायपुर से महज 22 कि.मी. की दूरी पर पुर्व दिशा मे स्थित है, वर्तमान मे इस ग्राम कि मुख्य पहचान माता कौशिल्या धाम नगर पंचायत चंदखुरी से दक्षिण दिशा मे 3 कि.मी. कि दुरी पर है। गांव कि कुल जनसंख्या के ज्यादातर लोग एस.सी. व पिछड़ा वर्ग मे आते है। और मुख्यतः कृषि कार्य मे जुडे है। कुछ सम्पन्न घरानों मे से कुछ अधिकारी के रूप सेवा दिए है। वर्तमान मे गांव मे प्राथमिक स्तर तक की शाला संचालित है। संबंधित ग्राम पंचायत के तहत चंदखुरी फार्म मे माध्यमिक व हायर सेंकण्ड्री स्कुल संचालित है।

हमारी शाला मे प्रधानमंत्री पोषण आहार योजना (मध्यान भोजन) का संचालन ग्राम स्वराज महिला स्व.सहायता समुह के द्वारा संचालित है जिसके द्वारा बच्चों को गुणवत्ता युक्त गरम भोजन प्रदान किया जाता है।

महत्वपुर्ण चुनौतियाँ

❖(1) आदर्श स्कूल निर्माण में समुदाय को शाला से जोड़नाः–

❖(2) बच्चों को शाला समय तक ठहरावः–

आदर्श स्कूल निर्माण में शाला का भौगोलिक वातावरण एक लीडरशीप को काफी हद तक प्रभावित करता है, 24/08/2017 को जब मै प्रधान पाठक के रूप मे अपनी पद का कार्यभार ग्रहण किया तो मुझे कुछ चुनौतियॉ देखने को मिला तब से मेरे मन मे एक अच्छा भौगोलिक वातावरण निर्माण करने कि जिज्ञास उत्पन्न हुआ ।

❖ प्रभावकारी घटक :–

- ❖ मैदान मे गंदगी व समतलीकरण का न होना।
- ❖ पर्यावरणीय अधोसंरचनात्मक विकास मे कमी।
- ❖ असामाजिक तत्वों का दखल ।
- ❖ अरूचीपूर्ण अध्यापन ।
- ❖ नवाचार का प्रयोग न होना।

इस प्रकार के प्रभावकारी घटकों ने मेरे मन को प्रभावित किया और हमने संकल्प भाव से चुनौतियॉ को स्वीकार कर समस्याओं के उपर लक्ष्य निर्धारण कर स्वच्छ वातावरण का निर्माण करना प्रारंभ किया जो आदर्श स्कूल निर्माण मे सहायक है।

पहले स्कूल कि वस्तु स्थिति कुछ इस प्रकार

अधोसंरचनात्मक विकास मे किये गये प्रयास

एक लीडरशीप के रूप में चुनौतियॉ स्वीकार कर हम अपनी सहकर्मी के साथ आपसी सामंजस्य बिठाकर कार्य योजना तैयार किया। तत् पश्चात् जन समुदाय शाला प्रबंधन विकास समिति समुदाय व पालकों को अपनी कार्य योजना मे शामिलकर शाला से जोड़े रखने के लिए निरंतर संम्पर्क कर बैठक का शिलशिला जारी रखते हुए स्कुल स्तर पर अधोसंरचनात्मक विकास के लिए सहयोगात्मक भावना से मिलजुल कर काम करने सहमति लेते लेकर कार्य करना प्रारंभ किया। और इस प्रकार विकास कार्य निरंतर जारी रहा क्रमशः हमने आश्यकतानुसार प्राथमिकता क्रम मे स्कूल के मुख्य द्वार के दोनो ओर क्यारियॉ निर्माण कर। वृक्षारोपण कार्य किया और बच्चों के खेलने हेतु एक सुन्दर बागवानी का निर्माण कराया । तत् पश्चात् ग्राम के सरपंच से सहयोग लेकर स्कूल प्रांगण के चारो ओर क्यारियॉ बनवाऍ ।

रोपित किए गए वृक्षों को जीवित रखने के लिए अपने स्वयं कि राशि लगाकर 6.50 फिट भुमिगत पाईपलाईन बिछाकर नल कनेक्शन किया गया । जिसका पाईपलाईन व नल फिटिंग एक सहयोगी शिक्षक को साथ लेकर कार्य को संपन्न किया। इस प्रकार आज कि स्थिति मे हमारी शाला मे एक अच्छा भौगोलिक वातावरण निर्मित हुआ। जिसके चलते शाला को एक पहचान मिला और आदर्श शाला के रूप मे जाने पहचानने लगा ।

अध्ययन अध्यापन मे बदलाव

नवाचार गतिविधियॉ :–

अध्ययन अध्यापन को रूचिकर बनाये रखनें के लिए अपनी शाला में नित नये नये नवाचारी गतिविधियॉ का प्रयोग अपनाकर अध्यापन कार्य कराया जाता है । जिससे बच्चे आसानी से सीख पाते है।

नवाचार विषयः–

- कक्षावार कक्षा सजावट हेतू बच्चों में प्रतियोगिता।
- कक्षा के बाहर दिवाल पर बच्चों के प्रतिभा का प्रदर्शन ।
- पेटिंग आर्ट कार्नर का विकास।
- स्मार्ट क्लास का निर्माण ।
- आदर्श बच्चों का निर्माण ।
- प्रार्थना मंच का निर्माण।
- स्वतंत्र पठन के लिए मुस्कान पुस्तकालय ।
- रीडिंग कार्नर।
- प्रशन मंच ।
- वाद– विवाद ।
- लर्निंग आउट कम मे बदलाव।

❖(2) बच्चों को शाला समय तक ठहराव :–

एक महत्वपुर्ण चुनौती के तहत शाला मे अध्ययनरत बच्चा पुर्णतः शाला समय तक ठहराव के लिए अपनी शाला मे हर संभव प्रयासरत रहते है । जिसके लिए पालक से निरंतर संपर्क बनाकर बच्चों को शाला आने के लिए प्रेरित किया जाना,समय रहते स्कूल नही आने वाले बच्चों के पालकों से संपर्क कर तुरंत वस्तु स्थिति से अवगत होकर शाला लाने के लिए प्रयास किया जाता है। जरूरत पड़ने पर बच्चों को शाला आने पर प्रोत्साहन स्वरूप उचित तरीका अपनाकर कापी पेन पेंसिल आदि वस्तुए प्रदान की जाती है। जिससे बच्चा उत्साहित होकर नियमित शाला आने लगे जरूरत के मुताबिक कक्षा अध्यापन को सरल एवं सहज रूचिकर बनायें रखनें के लिए प्रयोगात्मक तौर तरीका व बच्चों कि सहभागिता अपनाकर अध्यापन का कार्य कराया जाना जैसें विषय शामिल है।

कक्षा के अंदर सुंदर प्रिंट रिच वातावरण निर्माण आर्कषक पेंटिंग कराया गया है जो बच्चा को शाला समय तक ठहराव जैसे विषय मे सहायक होता है। पालनार्थ कक्षा अनुरूप पेंटिंग कार्य कराया गया और कक्षा के बाहर सुंदर स्वच्छ वातावरण व बाहरी दिवालों और वृक्षों पर आर्कषक पेंटिंग कराकर एक उचित माहौल तैयार किया गया है। जिससे बच्चा आकर्षित होकर स्कूल में पुर्ण समय रहकर अध्ययन अध्यापन कर पा रहे है।

मॉडल कक्ष का निर्माण

हमारी शाला में शाला के सभी शिक्षक साथी के सहयोग लेकर एक 52 इंच स्मार्ट टी.वी. लेकर माडल कक्ष का निर्माण किया गया है। जिससे बच्चा उत्साहित होकर टी.वी. के माध्यम से आनंद पुर्वक अध्यापन कर पा रहे है। और बच्चा अपने आप को सरल एवं सहज महसुस करने लगे है। उक्त प्रकार के संसाधन उपलब्धता के चलते शाला में बच्चा पुर्ण समय तक रहकर अध्ययन अध्यापन करने लगे है जो हमारे विद्यालय के लिए गौरव का विषय और हमारे लिए उपलब्धि रहा है।

असामाजिक गतिविधियों पर रोक

शाला परिसर मे आये दिन स्कूल आहाता की कम उॅचाई के चलते असामाजिक तत्वों द्वारा परिसर मे गंदगी व तोड़फोड कर छति पहुॅचाना एक बड़ी चुनौती बना रहा उक्त समस्या के समाधान के लिए निरंतर शाला प्रबंधन एवं विकास समिति के सदस्यों का नियमित बैठक आहुत कर समस्या को अवगत कराकर चर्चा परिचर्चा कर समस्या का समाधान करना मुनादी कर जन संदेश के माध्यम से पालकों को जागरूक कर व जन प्रतिनिधियों से संर्पक व आवश्यक सहयोग लेकर नियमानुसार उचित कार्यवाही जैसे विषय को अपनाकर असामाजिक गतिविधियों पर छुटकारा मिला और वर्तमान में आज हमारे पाठशाला को आदर्श स्कूल के रूप मे पहचान मिला ।

विद्यालय मे बच्चों के ठहराव हेतु सदस्यों द्वारा महत्वकांक्षी कारक

हमारे शाला विद्यालय समय तक ठहराव हेतु व विद्या अध्ययन को रूचिकर बनाने के लिए कई सदस्यों द्वारा या जन सहयोग के तहत शाला को सहयोग प्रदान कर एक अच्छा वातावरण तैयार करने मे एक अहम भुमिका निभाया है ,जिसके अंतर्गत शाला प्रबंधन समिति के अध्यक्ष श्री पुनाराम वर्मा के द्वारा शाला विकास के लिए सर्वप्रथम 5000रूपये सहयोग प्रदान शाला को एक नई गति दी है उक्त राशि का अपने स्तर पर आवश्यकतानुसार खर्च किया गया और अध्यक्ष के द्वारा शाला विकास मे हर संभव मदद् के लिए तत्पर रहते है। और लगन पुर्वक मेहनत करने से नही चुकता जो अन्य सदस्य व हमारे लिए प्रेरणादायक है। सदस्य डॉ.योगेश नायक द्वारा बच्चों के पढ़ाई को और अधिक रूचिकर बनाने के लिए 16 नग डिजिटल राईटिंग पेड व अन्य सहायक समाग्री प्रदान कियें। जो बच्चों के लिए उपयोगी सिद्व हुआ इस प्रकार मेडिकल चंदखुरी फार्म द्वारा स्व.श्री प्रेमनारायण कि स्मृति मे 4 नग गार्डन खुर्शी प्रदान कर एक मिशाल कायम कि सहयोग कि शिलसिला निरंतर जारी रहा जिसके चलते आज कि स्थिति मे हमारी शाला नवाचार कि दिशा व दृष्टिकोण के तहत विद्यालय विकास मे उपयोगी सिद्व हुआ।

स्वयं कि प्रतिभा की पहचान

प्रतिभा उम्र कि मोहताज नही होती इस बात को ध्यान मे रखते हुए बच्चों के अंदर छुपी हुई प्रतिभा को परखने के लिए विविध प्रकार के रचनात्मक गतिविधियों का आयोजन कर बच्चे व स्वयं कि प्रतिभा को पहचान कर पाने मे मदद् मिलती है जिससे बच्चा या स्वयं के अंदर छुपी हुई जागृत हो और अपनी कला को प्रदर्शन कर सकने मे सक्षम हो

खण्ड –04

विद्यालय मे लाए गए परिवर्तन

परिवर्तन प्रकृति का नियम है जिसके चलते हमारी शाला में आमुलचुल परिवर्तन हुआ है। शाला के अंदर साफ सुथरा मैदान निर्मित कर व्यवस्थित तौर तरीका से छायादार वृक्ष लगे होने के कारण यहॉ कि वातावरण बच्चों के अनुरूप सदाबहार एवं खुशनुमा प्रतीत होता है चारो ओर हरियाली सुंदर गार्डन स्वच्छ खेल मैदान विकसित किया है मैदान मे लगे सभी प्रकार के खेल सामाग्री बर्बश बच्चों को आकर्षित करती है और बच्चें आनंद पुर्वक मौज मस्ती के साथ समय समय पर खेल का लाभ उठाते है। यहॉ कि हरियाली देखते ही बनता है, जो आकर्षण का केंद्र बना हुआ है।

विद्यालय मे लाए गए परिवर्तन के तहत शाला मे हम अपनी हाथों से आर्कषक एवं सुंदर सुंदर चित्रकारी कर शाला को आर्कषक बनाने मे कोई कसर नही छोड़ा बच्चों के साथ घुलमिल कर गतिविधियों मे सहभागिता निभाकर एक साथ खेलना जिससे बच्चें आनंद पुर्वक खेल का मजा लेते है ।

खेल संसाधन उपल्ब्ध कराना

हम अपनी स्तर पर नगर पंचायत कौशिल्या धाम चंदखुरी के मुख्य नगर पालिका अधिकारी को अपनी विद्यालय मे आमंत्रित कर वस्तु स्थिति से अवगत कराकर चर्चा परिचर्चा कर पत्राचार के माध्यम से शाला मे बच्चों के लिए खेल हेतु आवश्यक संसाधन उपल्ब्ध करायें जानी कि मांग पत्र सौंपा गया जिसमें हमे बड़ी सफलता मिली और आज हमारे स्कूल खेल मैदान मे व्यस्थित ढ़ंग से 18 प्रकार के खेल सामाग्री लगा हुआ है। जिसमें मुख्य रूप से झुला,खिसल पट्टी,जिमबार,आदि सामाग्री का आनंद बच्चें लेते है।

बाल क्रिड़ा प्रतियोगिता मे सहभागिता

बालक्रिड़ा प्रतियोगिता का आयोजन किया जाकर बच्चों के सहभागिता के चलते हम लोग बच्चों के साथ घुलमिलकर खेल खेलते है खेल का परिणाम में जान बुझकर शिक्षक साथियों का हार जाना बच्चों मे परिवर्तन व चर्चा का विषय रहता है। बच्चा यह समझता है कि हम आज अपने शिक्षक को खेल मे हरा दिया जिसमें बच्चें अपने आप को गौरव महसुस करते है।

माता उन्नमुखीकरण के माध्यम से विद्यालय मे परिवर्तन

- ग्रामीण जनजीवन मे अधिकांश माताएं कामकाजी होने के कारण बच्चों का सही देखभाल नही कर पाती उन्हे जागरूक करने हेतु समय समय पर माता उन्नमुखीकरण कार्यक्रम का आयोजन शाला स्तर पर किया जाता है। जिससे बच्चें व शाला स्तर स्यमं माताएँ पर परिवर्तन लाने मे मदद् मिलती है।

उददे्श्य :–

- शिक्षा के स्तर मे सुधार ।
- माता व बच्चें के बीच सहभागिता ।
- स्वास्थ्य शिक्षा पर ध्यानाकर्षण ।
- गुड टच बेड़ टच ध्यानाकर्षित करना।
- बच्चों के साथ कुछ पल अध्ययन अध्यापन करना ।
- बच्चों के झिझक दुर करने मे सहायक ।

विद्यालय मे परिवर्तन के तहत परंमपराओं संस्कृति के संरक्षण हेतु शाला मे त्योहारों के अवसर पर विविध कार्यक्रम का आयोजन कराकर अपनी संस्कृति व रितिरिवाज को समझने के लिए कार्यक्रम कराकर बच्चे व विद्यालय स्तर मे अपनी संस्कृति को समझने पर बल मिलता है जिसके तहत विद्यालय व बच्चों मे परिवर्तन आया है।

पुरखा के सुरता नामक धरोहर कक्ष का निर्माण

परम्परागत ग्रामीण जनजीवन की मुलभुत उपयोगी वस्तुओ का संग्रहण करने के लिए धरोहर कक्ष का निर्माण किया गया है। जिसमे हमारे पुर्वजों के द्वारा उपयोग मे लाये गये वस्तुओं को संग्रह कर रखा गया है। जिसमे अधिकांतः सामाग्री प्राचीन एवं दुर्लभ है। विलुप्त हो रही संस्कृति को देखने समझने के तहत पुरखा के सुरता नामक कक्ष का निर्माण किया गया है। उक्त निर्माण के चलते हमारी विद्यालय मे परिवर्तन आने लगा जिसके चलते आस पास व दुर दराज के शिक्षक स्कुली बच्चें शैक्षिक भ्रमण मे आने लगे है। जो अपने आप मे गौरव का विषय है। अभी तक दर्जनो स्कूल के बच्चे व प्रधान पाठक अवलोकन कर चुके है। जिसे देखने क्षेत्र के यस्स्वी मंत्री डॉ. शिवकुमार डहरिया नगरीय प्रशासन एवं श्रम विभाग के द्वारा अवलोकन किया गया है।

मुख्यमंत्री शिक्षा गौरव अलंकरण पुरूस्कार

विद्यालय मे लाए गए परिवर्तन के फलस्वरूप माह 31 जनवरी 2023 को मुख्यमंत्री शिक्षा गौरव अलंकरण पुरूस्कार के तहत उत्कृष्ठ प्रधान पाठक के रूप मे सम्मानित हुआ। सम्मान कार्यक्रम माननीय मंत्री डॉ. प्रेमशाय सिंह टेकाम शिक्षा मंत्री छ.ग. शासन के हाथों सम्मान मिला। सम्मान के चलते स्कूल को एक नयी पहचान मिली इस प्रकार का परिवर्तन विद्यालय मे आया है यही मेरा मानना है ।

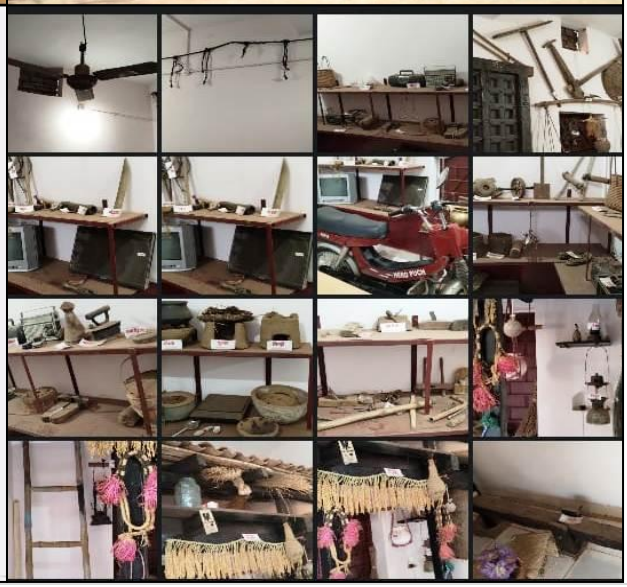

खण्ड — 05

संस्था प्रमुख स्वयं को विद्यालय नेता के रूप किस प्रकार देखते है

विद्यालय मे संस्था प्रमुख आपसी सामंजस्य सरल सहज मिलनसार सहकर्मी के साथ मधुर व्यवहार अपनाकर सबको साथ लेकर चलने कि आवश्यकता जैसे :— विषय को अपनाकर कार्य करना होता है एक संस्था प्रमुख के अंदर लगन,जुनुन,और मेहनतकश का होना आवश्यक होता है । जो एक संस्था को नयी उँचाई तक ले जा सकते है एक संस्था प्रमुख के रूप में हमने पुरी ईमानदारी निष्ठा पुर्वक लगन के साथ शाला विकास के लिए निरंतर कार्य करते रहने की आदत को अपनाकर कार्य प्रारंभ किया । हम अपने अंदर छुपी हुई प्रतिभा को शाला परिवार के सदस्यों व अध्ययनरत बच्चों के बीच प्रदर्शन करने मे कोई कसर नही छोड़ा ताकि बच्चे व शिक्षक साथी के मन में अनुकरण कि प्रवृत्ति जागृत हो सके और अपनी अंदर छुपी हुई कला को प्रदर्शित करने मे सक्षम हो और बच्चे के मन मे कलात्मक भावना का विकास उत्पन्न हो सके यही मेरा मानना है।

संस्था प्रमुख के रूप मे मै अपने शिक्षक साथियों को अपने से कभी छोटा नही मानकर उनकी विचारों को सुनना पसंद करता हुँ क्यों कि विचार मे सार्थकता छुपी हुई होती है उन बातों को अपने जीवन में उताकर या अध्ययन कर एक नयी दिशा को प्राप्त कर सकने मे मदद् मिलती है। मै सदा संस्था प्रमुख के रूप में अपने आप को छोटा समझकर बच्चों मे भावनात्मक उत्पन्न करने के लिए बच्चों के बीच बैठकर अध्ययन करने से नही चुकता ताकी बच्चों के मन मे यह भाव उत्पन्न हो सके कि आज हमारे संस्था प्रमुख हमारे साथ बैठकर विद्या अध्ययन किया। हम किसी प्रश्नों के उत्तर जानने के लिए शिक्षक साथियों से मदद् लेकर उत्तर जानने कि जिज्ञासा मन मे बनी रहती है इन्ही भावनाओं को अपनाकर कुछ नया काम करने कि ललक बनी रहती है। मेरा सौभाग्य है कि मुझे संस्था प्रमुख के रूप मे काम करने का दायित्व मिला है। जिसकों मै निभा सकू ।

एक संस्था प्रमुख को संकल्पित भाव से काम करते रहने कि आश्यकता है निरंतर कार्य करते रहने से एक नयी मंजिल को पा सकने मे सहायक होता है संस्था प्रमुख के रूप मे यही मेरा मानना है।

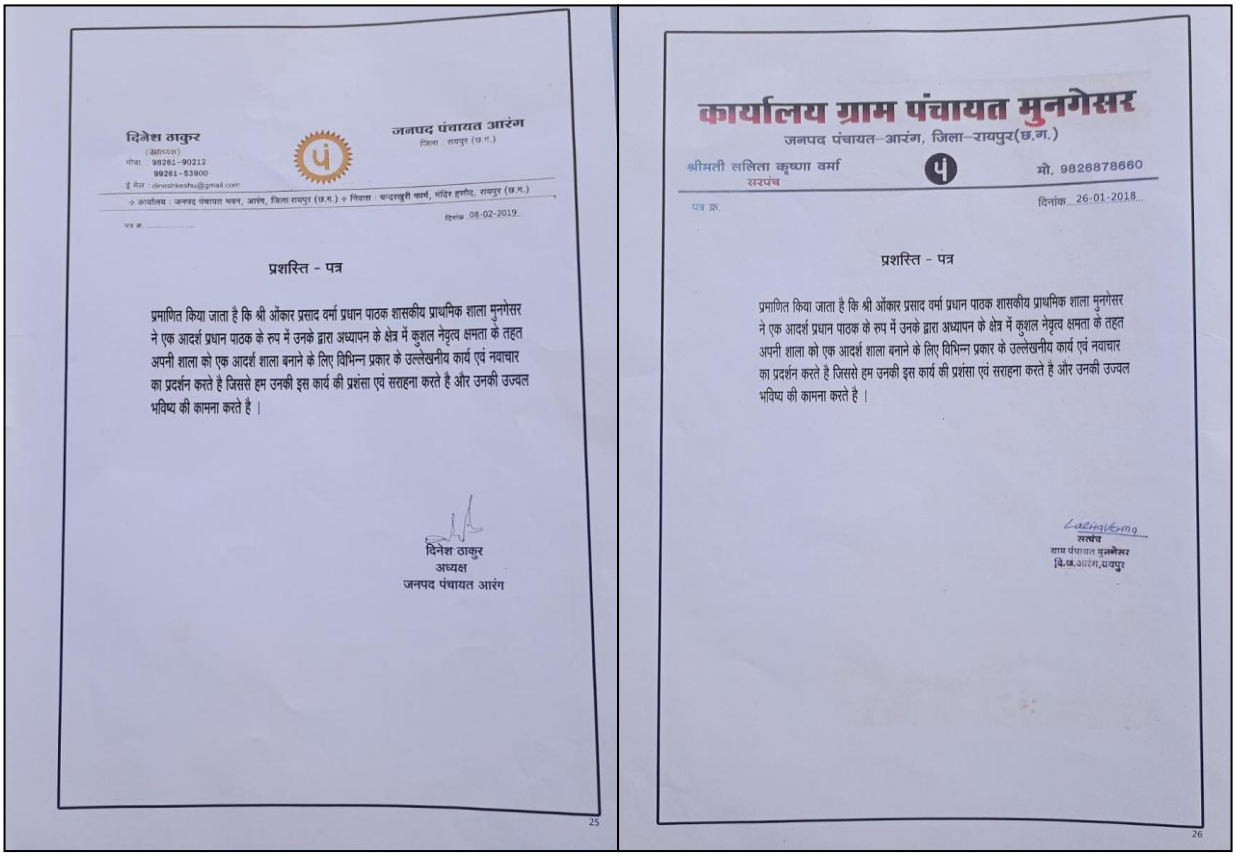

दिनेश ठाकुर
(अध्यक्ष)
मोबा. 98261-90212
99261-53900
ई मेल : dineshkeshu@gmail.com

जनपद पंचायत आरंग
जिला : रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय : जनपद पंचायत भवन, आरंग, जिला रायपुर (छ.ग.) निवास : चन्दरखुरी फार्म, मंदिर हसौद, रायपुर (छ.ग.)

पत्र क्र. ....

दिनांक 08-02-2019

प्रशस्ति - पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि श्री ओंकार प्रसाद वर्मा प्रधान पाठक शासकीय प्राथमिक शाला मुनगेसर ने एक आदर्श प्रधान पाठक के रुप में उनके द्वारा अध्यापन के क्षेत्र में कुशल नेवृत्व क्षमता के तहत अपनी शाला को एक आदर्श शाला बनाने के लिए विभिन्न प्रकार के उल्लेखनीय कार्य एवं नवाचार का प्रदर्शन करते है जिससे हम उनकी इस कार्य की प्रशंसा एवं सराहना करते है और उनकी उज्वल भविष्य की कामना करते है ।

दिनेश ठाकुर
अध्यक्ष
जनपद पंचायत आरंग

25

कार्यालय ग्राम पंचायत मुनगेसर
जनपद पंचायत–आरंग, जिला–रायपुर(छ.ग.)

श्रीमती ललिता कृष्णा वर्मा
सरपंच

मो. 9826878660

पत्र क्र.

दिनांक 26-01-2018

प्रशस्ति - पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि श्री ओंकार प्रसाद वर्मा प्रधान पाठक शासकीय प्राथमिक शाला मुनगेसर ने एक आदर्श प्रधान पाठक के रूप में उनके द्वारा अध्यापन के क्षेत्र में कुशल नेवृत्व क्षमता के तहत अपनी शाला को एक आदर्श शाला बनाने के लिए विभिन्न प्रकार के उल्लेखनीय कार्य एवं नवाचार का प्रदर्शन करते है जिससे हम उनकी इस कार्य की प्रशंसा एवं सराहना करते है और उनकी उज्वल भविष्य की कामना करते है ।

Lalitaverma
सरपंच
ग्राम पंचायत मुनगेसर
वि.ख.आरंग,रायपुर

26